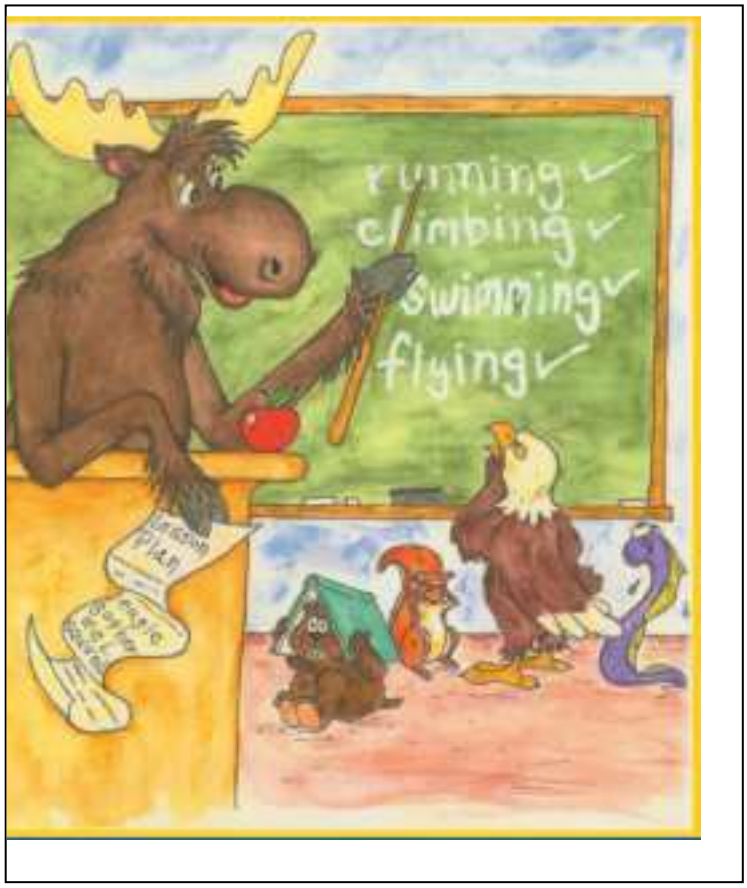

जानवरों का स्कूल

जार्ज एच. रेविस

उन सभी बच्चों और बड़ों को समर्पित
जिन्होंने पाठ्यक्रम और परीक्षा
के अन्याय को सहा

एक समय की बात है

सभी पशुओं ने मिल कर निश्चय किया कि,
नए ज़माने की बड़ी-बड़ी समस्याओं से निबटने के
लिए उन्हें कोई क्रांतिकारी कदम उठाना ही होगा.

इसलिए उन्होंने एक स्कूल
शुरु करने का निर्णय लिया.

स्कूल के पाठ्यक्रम में
चार विषय थे -
दौड़ना, चढ़ना, तैरना और उड़ना.

शिक्षकों की आसानी और मूल्यांकन की सुविधा के लिए, सभी छात्रों को इन सभी विषयों में भाग लेना था.

बत्तख तैरने में उस्ताद निकली -
वो अपने शिक्षक चूहे से भी तेज़ तैरी.

बत्तख उड़ने में बस पास हुई, पर दौड़ने में
उसके कक्षा में सबसे कम अंक आए.

दौड़ने में कमज़ोर होने के कारण उसे छुट्टी के बाद स्कूल में रुककर उसका अभ्यास करना पड़ता था. बत्तख तैराकी छोड़ कर अब सिर्फ दौड़ने की प्रैक्टिस करती थी.

दौड़ते-दौड़ते उसके मुलायम झिल्लीदार पंजे घिस गए - जिससे वो तैराकी में भी औसत हो गयी. स्कूल में औसत नंबर आना ठीक समझा जाता था. इसलिए स्कूल और शिक्षकों पर इसका कोई असर नहीं हुआ. पर बत्तख इससे बहुत परेशान हुई.

दूसरी ओर खरगोश दौड़ने में अव्वल था
पर तैरने में कमज़ोर था. उसे दौड़ना छोड़कर
बस तैराकी का अभ्यास करना पड़ा.

तैरने का अभ्यास करते-करते बेचारे
खरगोश की जान ही निकल गई.

गिलहरी चढ़ने में अव्वल थी पर उड़ने में बिलकुल जीरो थी. टीचर हिरन उसे पेड़ पर ऊपर से नीचे उड़ने की बजाए, नीचे से ऊपर उड़ने को कहता था.

उड़ने की प्रैक्टिस करते-करते गिलहरी के पंजे खराब हो गए जिससे अब चढ़ाई में वो औसत ही रह गई. भागने में वो बिलकुल फिसड्डी थी.

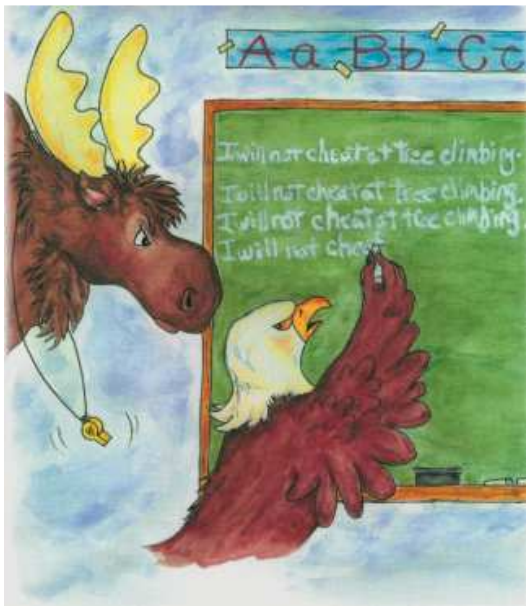

चील क्यूंकि काफी शैतान थी इसलिए उसे दंड और सज़ा देकर अनुशासित और सीधा किया गया.

उड़ने की क्लास में चील सभी पशुओं को
हराकर पेड़ की चोटी पर सबसे पहले पहुँची.

साल के अंत में सांप सभी जानवरों में सर्वप्रथम आया. वो अच्छा तैर सकता था. पर दौड़ने, चढ़ने और उड़ने में वो बिलकुल औसत था.

फिर भी उसके सबसे ज्यादा अंक आए
और उसने स्कूल में पहला स्थान पाया.

कुत्तों ने स्कूल का बहिष्कार किया और शिक्षा विभाग के सामने जाकर धरना दिया. लम्बे अरसे से उनकी मांग थी कि पाठ्यक्रम में “खुदाई” का विषय भी शामिल हो.

कुत्तों ने ज़मीन खोदने वाले अन्य जानवरों
के साथ मिलकर, अपना एक वैकल्पिक निजी स्कूल
खोला जो जल्दी ही अच्छा चल निकला.

क्या ये कहानी हमें कुछ सिखाती है -
शायद वो हमारे समाज की किसी गंभीर
समस्या की ओर इशारा करती है?

बतौर शिक्षक हम अपना सारा जीवन यह बात समझने में लगा देते हैं कि हर बच्चा अनूठा होता है और अलग तरीके से सीखता है. परीक्षाएं, इम्तिहान के नंबर, IQ टेस्ट, सभी इस बात की पुष्टि करते हैं. इस बात को हम देखते हैं, पढ़ते हैं, गोष्ठियों में चर्चा करते हैं, दूसरों को बताते हैं और सार्वजनिक तौर पर मानते भी हैं.

पर कुल मिलकर इसका क्या फायदा?

आज भी शिक्षा अधिकारियों का बस एक बात पर ही जोर होता है - शिक्षक सभी बच्चों को, एक ही पाठ्यक्रम को, एक ही तरीके से सिखाए. बच्चों के सीखने के तरीके अलग-अलग हो सकते हैं, उनकी योग्यताएँ भिन्न हो सकती हैं, पर इससे सरकारी आदेश को कुछ लेना-देना नहीं होता.

अच्छी बात ये है कि, मास्तिष्क के ऊपर चल रहे शोध और हावर्ड गार्डनर की Theory of Multiple Intelligence, बच्चे कैसे पढ़ते और समझते हैं इस विषय के नए आयाम खोल रही है

जानवरों का स्कूल एक अदभुत कहानी है. उसमें एक महत्वपूर्ण सन्देश छिपा है जो सभी शिक्षाविदों के लिए बहुत ज़रूरी है: शिक्षा के क्षेत्र में तेज़ी से बदलाव आ रहा है, इस बात को हम नज़रअंदाज़ करते हैं. सब बच्चे अलग-अलग होते हैं और उनके पढ़ने और सीखने के तरीके भी अलग-अलग होते है. वर्तमान शिक्षा पद्दति हमारे बच्चों को असफलता की ओर धकेल रही है.